

# The Rattrap Summary Class 12

**Class 12 English Chapter 4 The Rattrap Summary for Board Exam 2023-24** - In this post, I am sharing the detailed **The Rattrap Summary Class 12, About the Author, Theme & Message**. If you are going to appear at the upcoming CBSE Class 12th Exam 2023-24, You must learn this chapter, because various questions are asked from The Rattrap Chapter.

## The Rattrap About the Author

Selma Lagerlöf was born in Sweden in 1858. She grew up on her family's estate and only left when she went to a teachers' college in Stockholm in 1881. After becoming a teacher in Landskrona in 1885, she started writing. Even though she wrote poetry since she was young, she didn't publish anything until 1890. Her stories have been translated into many languages. All of her stories share a common idea: the belief that love can bring out the natural goodness in people.

सेल्मा लागर्लोफ 1858 में स्वीडन में जन्मी थी। उन्होंने अपने परिवार के खेतों में बड़ी की थी और केवल 1881 में स्टॉकहोम में एक शिक्षक कॉलेज जाने पर छोड़ा था। 1885 में लैंड्सक्रोना में शिक्षक बनने के बाद, उन्होंने लिखना शुरू किया। वे बचपन से ही कविता लिखती थीं, लेकिन 1890 तक कुछ भी प्रकाशित नहीं किया। उनकी कहानियाँ कई भाषाओं में अनुवादित की गई हैं। उनकी सभी कहानियाँ एक सामान्य विचार को साझा करती हैं: प्रेम से मानव में प्राकृतिक भलाई को बाहर लाया जा सकता है।

## Theme of the Rattrap

"The Rattrap," written by Selma Lagerlof, is a short story about an old peddler and thief who feels disappointed with life who is taken in and shown generosity by a young woman. Her kindness changes his bitter attitude about life. Justification of the Title Selma Lagerlof gives a very apt and logical title to the story. The metaphor of the rattrap is very effectively used. The whole world is nothing but a big rattrap. All riches, joys, food and shelter are just baits. The moment anyone touches the bait, the rattrap closes in on him. Then everything comes to an end.

सेल्मा लेगरलोफ द्वारा लिखित "द रैट्रैप" एक बूढ़े फेरीवाले और चोर के बारे में एक छोटी कहानी है, जो जीवन से निराश महसूस करता है, जिसे एक युवा महिला ने पकड़ लिया और उदारता दिखाई। उसकी दयालुता जीवन के प्रति उसके कड़वे रवैये को बदल देती है। शीर्षक का औचित्य सेल्मा लेगरलोफ कहानी को बहुत उपयुक्त और तार्किक शीर्षक देती है। चूहेदानी का रूपक बहुत प्रभावी ढंग से प्रयोग किया गया है। पूरी दुनिया एक बड़े चूहेदानी के अलावा और कुछ नहीं है। सभी धन, खुशियाँ, भोजन और आश्रय केवल चारा हैं। जैसे ही कोई चारा छूता है, चूहेदानी उसके करीब आ जाती है। फिर सब कुछ खत्म हो जाता है।

## Message of the Rattrap

In the story, the author Selma Lagerlof conveys a definite message. The story has a universal appeal. The essential goodness in a human being never dies. It can be awakened through understanding and love. Miss Edla awakens the basic goodness of the peddler. He is transformed into a noble person in the end.

कहानी में, लेखिका सेल्मा लेगरलोफ एक निश्चित संदेश देती हैं। कहानी में सार्वभौमिक अपील है। मनुष्य में आवश्यक अच्छाई कभी नहीं मरती। इसे समझ और प्यार से जगाया जा सकता है। मिस एडला फेरीवाले की बुनियादी अच्छाई को जागृत करती है। अंत में वह एक महान व्यक्ति में परिवर्तित हो जाता है।

## The Rattrap Summary

The story begins like a fairy tale: "Once there was a poor man who sold rat-traps made of wire." He didn't earn enough from these traps, so he resorted to begging and sometimes stealing small things. Then, he had a thought that the world is like a rat-trap full of things trying to tempt people. Just like a rat is tempted by the cheese in a rat-trap, people are tempted by things like wealth and power.

The man selling rat-traps lived a poor life without enough food or proper shelter. So, he looked upon the world like this in the light of his own sufferings. Once he took shelter in the house of a man who had been a crofter in Ramsjo Iron-Works. The man was without any family and was lonely. He welcomed the peddler.

The crofter was friendly and generous. He was offered supper and tobacco. They also played a game of cards, told him about his life, and showed him the thirty kroner that he kept near the window. The peddler stole the money and left. Initially, he was happy to get the money but very soon fearing detection, he avoided the highway.

He then saw the forge of the Ramsjö Iron-Works and went there to spend the night near the forge. At that time, the iron-master, the owner of the factory, came in. The iron-master mistook him to be his old friend, Nils Olof, with whom he had served in the regiment.

To help his friend who he perceived had fallen into bad days, he invited the peddler to his house. The peddler realized that the iron-master was making a mistake but he did not correct him in a hope that he might give him some money. He did not want to go to the iron-master's house as he feared that he might be detected.

The ironmaster sent his daughter when he failed to convince the peddler. The kind-hearted daughter of the ironmaster, Edla Willmanson, was compassionate and loving. She suspected that the man might have committed some crime. But she ignored that and thought that the man, haunted by fear, must have lived a miserable life.

She wanted to give him at least a night's peace and security. She assured the peddler that in her house, he would be safe and he would be free to leave anytime. She persuaded him to be her guest on the Christmas Eve. The genuine compassion Edla showed gave the man a sense of peace and security. He slept as if he wanted to make up for the sleepless nights he had spent throughout his life.

The following morning, on Christmas Eve, the ironmaster and his daughter discussed how to help the peddler. The ironmaster planned to help him regain his health and also to assist him in finding a vocation for himself.

The peddler was bathed, shaved and given a hair cut. When he presented himself to his host, the ironmaster realised that it was not his comrade. He threatened to call the sheriff but Edla intervened. She persuaded her father to let him stay and not to chase away a person who had been promised good cheer by the ironmaster.

The daughter gave him the suit that he was given to wear and she invited him next Christmas also and assured him of secrecy and security. The peddler was overwhelmed. The next morning, he left the manor house. But before leaving, he left the packet containing the thirty kroner of the crofter.

He wrote a letter to Edla asking her to return the money to the crofter. He wrote that she had treated him with respect as if he were a real captain. She had treated him as a man and not as a thief. That genuine regard had induced him to be a better man and give up stealing. The genuine compassion and kindness of Edla changed the life of a thief and turned him into a better man.

## The Rattrap Summary Class 12 in Hindi

कहानी एक परी कथा की तरह शुरू होती है: "एक बार एक गरीब आदमी था जो तार से बने चूहेदानी बेचता था।" इन जालों से उसकी पर्याप्त कमाई नहीं हो पाती थी, इसलिए उसने भीख मांगने और कभी-कभी छोटी-छोटी चीजें चुराने का सहारा लिया। तब, उसके मन में यह ख्याल आया कि दुनिया एक चूहेदानी की तरह है जो लोगों को लुभाने की कोशिश करने वाली चीजों से भरी हुई है। जैसे चूहेदानी में चूहे को पनीर लुभाता है, वैसे ही लोग धन और शक्ति जैसी चीजों से ललचाते हैं।

चूहेदानी बेचने वाला व्यक्ति पर्याप्त भोजन या उचित आश्रय के बिना गरीब जीवन जीता था। इसलिए, उन्होंने अपने कष्टों के आलोक में दुनिया को इस तरह देखा। एक बार उन्होंने रैम्सजो आयरन-वर्क्स में एक आदमी के घर में शरण ली, जो क्रॉफ्टर था। उस व्यक्ति का कोई परिवार नहीं था और वह अकेला था। उन्होंने फेरीवाले का स्वागत किया।

क्रॉफ्टर मिलनसार और उदार था। उन्हें रात्रि भोज और तम्बाकू की पेशकश की गई। उन्होंने ताश का खेल भी खेला, उसे उसके जीवन के बारे में बताया, और उसे वह तीस क्रोनर दिखाया जो उसने खिड़की के पास रखा था। फेरीवाले ने पैसे चुराये और चला गया। शुरुआत में, वह पैसे पाकर खुश था लेकिन जल्द ही पहचाने जाने के डर से उसने हाईवे से दूरी बना ली।

इसके बाद उन्होंने रैम्सजो आयरन-वर्क्स की जाली देखी और जाली के पास रात बिताने के लिए वहां चले गए। उसी समय, कारखाने का मालिक, आयरन-मास्टर, अंदर आया। आयरन-मास्टर ने उसे अपना पुराना दोस्त, निल्स ओलोफ़ समझा, जिसके साथ उसने रेजिमेंट में काम किया था।

अपने दोस्त की मदद करने के लिए, जिसके बारे में उसे लगा कि वह बुरे दिनों में फंस गया है, उसने फेरीवाले को अपने घर पर आमंत्रित किया। फेरीवाले को एहसास हुआ कि लोहा-मालिक गलती कर रहा था, लेकिन उसने इस आशा में उसे सुधारा नहीं कि शायद वह उसे कुछ पैसे दे देगा। वह लोहा-मालिक के घर नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसका पता न चल जाए।

फेरीवाले को समझाने में विफल रहने पर लोहा मालिक ने अपनी बेटी को भेजा। आयरनमास्टर की दयालु बेटी, एडला विलमैनसन, दयालु और प्यार करने वाली थी। उसे संदेह था कि उस आदमी ने कोई अपराध किया होगा। लेकिन उसने इसे नजरअंदाज कर दिया और सोचा कि वह आदमी डर से परेशान होकर दुखी जीवन जी रहा होगा।

वह उसे कम से कम एक रात की शांति और सुरक्षा देना चाहती थी। उसने फेरीवाले को आश्वासन दिया कि उसके घर में, वह सुरक्षित रहेगा और वह कभी भी जाने के लिए स्वतंत्र होगा। उसने उसे क्रिसमस की पूर्व संध्या पर अपना मेहमान बनने के लिए राजी किया। एडला ने जो सच्ची करुणा दिखाई, उससे उस व्यक्ति को शांति और सुरक्षा का एहसास हुआ। वह ऐसे सोया मानो वह अपने पूरे जीवन में बिताई गई नींद की रातों की भरपाई करना चाहता हो।

अगली सुबह, क्रिसमस की पूर्व संध्या पर, आयरनमास्टर और उसकी बेटी ने फेरीवाले की मदद करने के बारे में चर्चा की। आयरनमास्टर ने उसे अपना स्वास्थ्य वापस पाने में मदद करने और खुद के लिए व्यवसाय खोजने में भी मदद करने की योजना बनाई।

फेरीवाले को नहलाया गया, मुंडन कराया गया और बाल काटे गए। जब उसने खुद को अपने मेज़बान के सामने पेश किया, तो आयरनमास्टर को एहसास हुआ कि यह उसका साथी नहीं था। उसने शेरिफ को बुलाने की धमकी दी लेकिन एडला ने हस्तक्षेप किया। उसने अपने पिता को मना लिया कि वह उसे वहीं रहने दे और उस व्यक्ति को न भगाए जिसे आयरनमास्टर ने अच्छे उत्साहवर्धन का वादा किया था।

बेटी ने उसे वह सूट दिया जो उसे पहनने के लिए दिया गया था और उसने उसे अगले क्रिसमस पर भी आमंत्रित किया और उसे गोपनीयता और सुरक्षा का आश्वासन दिया। फेरीवाला अभिभूत हो गया। अगली सुबह, वह जागीर घर से निकल गया। लेकिन जाने से पहले वह क्रॉफ़्टर के तीस क्रोनर वाला पैकेट छोड़ गया।

उसने एडला को एक पत्र लिखकर क्रॉफ़्टर को पैसे लौटाने के लिए कहा। उन्होंने लिखा कि उन्होंने उनके साथ ऐसा सम्मान किया जैसे कि वह असली कप्तान हों। उसने उसके साथ एक चोर की तरह नहीं बल्कि एक आदमी की तरह व्यवहार किया था। उस सच्चे सम्मान ने उसे एक बेहतर इंसान बनने और चोरी छोड़ने के लिए प्रेरित किया था। एडला की सच्ची करुणा और दयालुता ने एक चोर का जीवन बदल दिया और उसे एक बेहतर इंसान बना दिया।